लेट्स गो अब्रोड टु लर्न एंड अर्न

युवाओं में विदेश में पढ़ने का क्रेज है। कोई कैरियर सलाहकार के पास जा रहा है तो कोई बैंक में एजुकेशन लोन के लिए चक्कर काट रहा है।

टीना सुराणा

जयपुर, 8 नवम्बर। विदेश जाने की चाहत किसे नहीं होती। यह अलग बात है कि कोई कुछ दिन घूमकर वापस अपने मुल्क आना चाहता है तो कोई रोजगार के लिए वहीं बस जाना चाहता है। जयपुर शहर में इन दिनों सैकड़ों नौजवान विदेश जाकर नौकरी करने की तैयारी में लगे हुए है। यह अलग बात है कि शहर के अधिकर युवाओं की पसंद में सबसे पहले अमरीका है।

अमरीका ने आजकल उच्च शिक्षा और शॉर्ट टर्म कोर्सेस में सभी के लिए द्वार खोल दिए है। हालांकि पढ़ाई के लिए आस्ट्रेलिया, यूके, न्यूजीलैंड भी जाया जाता है लेकिन छात्र अमरीका को ज्यादा महत्व देते हैं। इसका एक कारण यह भी है कि वहां पर टॉप यूनिवर्सिटी के साथ जॉब के अवसर भी खूब है। हालांकि यूएस में पढ़ाई के लिए फंड भी काफी बड़ा चाहिए।

भले ही विदेश जाने से पहले लाखों खर्च करने पड़ते हैं लेकिन वहां नौकरी के अवसर भी बेहतर हैं। इसी के चलते यहां के युवाओं में इसका क्रेज बढ़ता जा रहा है। आजकल इंजीनियरिंग पढ़ने के लिए विदेश में खूब जाया जा रहा है। वहां पर अच्छे इंजीनियर को फर्स्ट जॉब में ही पांच से दस लाख रुपए का वेतन आसानी से मिल जाता है। छात्र अनिल चौधरी भी आस्ट्रेलिया में इंजीनियरिंग के लिए जाने की तैयारी कर रहे है। इसके लिए फंड का इंतजाम चल रहा है। वो बताते हैं कि एक बार पढ़ाई हो जाए उसके बाद नौकरी की कोई दिक्कत नहीं।

पढ़ाई के साथ पार्ट टाइम जॉब भी

विदेश जाने वाले छात्र वहां पढ़ाई के साथ-साथ जॉब भी करते हैं। पार्ट टाइम जॉब के जरिए वे अपने रहने का खर्चा आसानी से निकाल देते हैं। कुछ समय पहले ही छात्र राज जो कि अमरीका में पढ़ाई के लिए गया लेकिन वहां पर अब पढ़ाई के साथ-साथ पार्ट टाइम जॉब भी कर रहा है।

एजेन्ट से मिलो और एडमिशन पाओ

शहर में आजकल एजेन्टों का बोलबाला है। विदेश में कहीं भी शिक्षा लेनी हो तो बस छात्र को फॉर्म भरकर एजेन्ट से मिलना होता है। फॉर्म भरने के बाद कॉलेज के एडमिशन ऑफर का इंतजार किया जाता है और वो इंतजार पूरा करते हैं, एजेन्ट। शहर में ऐसे कई एजेन्ट है जो फोरन यूनिवर्सिटीज के ऑफर लैटर इश्यू करवाती है।

विदेश जाने से पहले परीक्षा

जब प्लेस और यूनिवर्सिटी डिसाइड हो जाती है, उसके बाद ही एन्ट्री परीक्षा सामने आती है। कई यूनिवर्सिटी सिर्फ 'इंटरनेशनल इंग्लिश लैंग्वेज टेस्टिंग सिस्टम' ही मांगती है लेकिन यूएस में अधिकतर यूनिवर्सिटी में प्रवेश के लिए कई जगह टैस्ट ऑफ इंग्लिश एस ए फोरन लैंग्वेज भी मांगा जाता है। दोनों ही परीक्षा अलग-अलग होती है हालांकि इंग्लिश ही होता है लेकिन टॉफल कम्प्यूटर बेस्ड होता है।

एन्ट्री के लिए भी कोचिंग

शहर में इन दिनों कई छात्र आई.ई.एल.टी.एस और टॉफल परीक्षा की तैयारी में लगे हैं। इन्साइट एजुकेशन की निदेशक कृतिका शर्मा बताती हैं कि उनके यहां कोचिंग के लिए जाने वाले अधिकतर स्टूडेन्ट्स ही होते हैं लेकिन जॉब के लिए जाने वालों में भी इन दिनों काफी क्रेज दिखाई दे रहा है। शर्मा ने बताया कि तकरीबन 60 प्रतिशत छात्र होते हैं और 40 प्रतिशत जॉब के लिए जाने वाले लोग। इस समय नर्सेस भी काफी आ रही है। दोनों ही परीक्षा ब्रिटिश काउंसिल और आईडीपी आस्ट्रेलिया दिल्ली की ओर से आयोजित की जाती है। परीक्षा कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी करवाती है। आउटरिच प्रोसेस के राजीव सोनी बताते हैं कि उनके यहां बाहर नौकरी के इच्छुक लोग अधिक है। उन्हें सभी परीक्षाओं की तैयारी करवाई जाती है।

विदेश जाने के लिए अमूमन कितना खर्च

छात्रों को विदेश जाने के लिए लाखों रुपए खर्च करने पड़ते है। यूनिवर्सिटी में उच्च शिक्षा के लिए पन्द्रह -बीस लाख रुपए खर्चा आता है। इसके लिए बैंक से ऋण लिया जाता है जिसके एवज में प्रोपर्टी रखनी पड़ती है। ऋण पास होने पर भारत के इंटरनेशनल बैंक से सीधे ही हर सेमेस्टर में रुपए पहुंचते हैं।

पढ़ाई के छह महीने बाद से किस्तें

छात्रों को पढ़ाई के लिए दिए जाने वाले ऋण की किस्तें शिक्षा पूरी होने के छह महीने बाद से ही शुरू हो जाती है। भले ही जॉब मिले ना मिले लेकिन बैंक का नियम छह महीने से लागू हो जाता है। वैसे अधिकतर छात्र-छात्राओं को शिक्षा के दौरान की जॉब के अवसर मिलने लगते हैं।